

बाख चोराशी योनिमां, फरी बियो अवतार। एकेकी योनि वली, अनंत अनंती वार ॥६॥ चेवद राज परमाणुळा, सूई छाप्रजाग ठाम । कर्मवशे जीव तुं जम्यो, मूरख चेतन ताम ॥॥॥ निगोद सूदम वादरे, पुजल अनंत ऋपार । एतो काख तुं तिहां रह्यो, हवे कर हैये विचार ॥ण। श्वास उच्हासा एकमां, मरगा सत्तर छाध कीध। मूक्म निगोदमांहे वली, ए जिन वचन प्रसिद्धाए॥ नरय विगलेंडी तिर्यच गति, जव कीचा वहु हेव। जवनपति ब्यंतर ज्योतिषी, और विमानिक देव॥१०॥ इम जमतां जमतां खियो, मनुख जनम खवतार। मिथ्यात्वपणे जव निर्गम्या, काज न सीध खगार॥१२॥ जगमां जीव द्यां चहु, एकद्युं द्यनन्ती वार । विविध प्रकार सगपण कियां, हेया साथ विचार॥१२॥ तो कुण आपणुं पारकुं, कुण वेरी कुण मित्त । गग हेप टाली करी, कर समता इक चित्त ॥१३॥

उत्तम कुल नर जव लही, पामि धर्म जिनराय। प्रमाद मूकी की जिये, खिए खाखी एो जाय ॥११॥ जिसुं कीजे तिसुं पाइये, करे तैसा फल जोय। सुख डुःख ञ्राप कमाइये, दोष न दीजे कोय॥१३॥ दोष दीजे निज कर्मने. जिए निव कीधो धर्म। धर्म विना सुख नवि मले. ए जिन शासन मर्म॥१४॥ वावी कूरी कोदरी, तो क्युं ब्रुणीये शाख। पुण्य विना सवि जीवमा, आशा आल पंपाल ॥१५॥ **आय पहोती आतमा, कोइ न**ि राखण हार । इंड चंड जिनवर वली, गया सवी निरधार ॥१६॥ मोहोढा मोढ न की जिये, न की जे मोहोटी वात। कोमी अनंतमें वेचियो, त्यारे किहां गइ जात ॥१९॥ श्रापसरूप विचार तुं, जो हुड् हियमे शान । करणी तेहवी कीजिये, जिम वाधे जग वान।।१०॥ वमपण धर्म थाये नहीं, जोवन एखे जाय। तरुण पणे धसमस करी, पठे फरी पठताय ॥१ए॥

पाप कियां जीव तें वहू. धर्म न किया लगार। नरक पड्यो यमकर चड्यो, तिहां करे पोकार ॥३७॥ कोई दिन राएयो राजियो कोई दिन जयो तृं देव। कोई दिन रांक तु अवतस्यो,करतो ओरज सेव ॥३ए॥ कोई दिन कोमी परिवयों, को दिन नहीं को पास। को दिन घर घर एकखों, जमें सही ज्युं दास ॥४०॥ को दिन सुखासन पालखी.जेठमची चकनोल। न्यपाला त्र्यागल चले. नित नित करत कलोल ॥४**८**॥ को दिन क्र कपूर तृ, जावत नहीं लगार। को दिन रोटी कारणे, जमतो घर घर बार ॥४०॥ र्रीर पीर पंग पहेरियां, चुत्र्या चंद्रन बहु खाय । मो तन जतन करत मो, किणमांही विघटाय ॥४३। मातमें मोप तुं शोजतो, कामिनी जोग विलास । ८१ रिन प्योदी लापेंग, रहेणो ही बनवास ॥धम र परेष कुमार सम, देख मोद्दे नर नार। मा नर पिण एकमां वर्षी, बिल जिल होते हार॥४५।

नारी वदन सोहामणुं, पण वाघण अवतार। जे नर एहने वश पड्या. तस खूंट्या घर वार ॥५४॥ हसतमुखी दीसे जली, करित कारमो नेह। कनकलता वाहिर जिसी, अन्तर पित्तल तेह ॥५५॥ पहेली प्रीत करि रंगझं, मीठा वोली नार। नरने दास करि छापणो, मूके टाकर मार ॥५६॥ नारी मदन तलावकी, बूड्यो सयल संसार। काढणहारो को नहीं, बूमा बूंव नवार ॥५९॥ वीश वसाना जे नरा, कोइ नहीं तस वंक। नारी संगति तेहने, निश्चें चढे कखंक ॥५०॥ मुज ने चंक प्रद्योतना, दासी पति पाम्या नाम। अनयकुमार बुद्धि अगगलो,तेह ठग्यो अनिराम।५ए। व नारी नहि रे वापमा, पण ए विपनी वेख ॥ जो सुख बांठे मुक्तिनां, नारी संगति मेख ॥६०॥ नारी जगमां ते जखी, जिए जायो पुरुष रतम । ते सतिने नित पाय नमुं, जगमां ते धन्न धन्न ॥६१॥

पूर्व को िन आउसे, पासी चारित्र सार। सुकृत सुणो सवि तेहनुं, क्षमां होवे ठार ॥१०॥ पर व्यवगुण सरशव समी, व्यवगुण निज मेरु समान। कां करे निंदा पारकी. मूरख आपण ज्ञान ॥७१॥ पर व्यवगुण जिम देखिये, तिम परगुण तुं जीय। परगुण लेतां जीवमा. अखय अजरामर होय ॥११॥ कोधी नग अने सदा, कहिये जे उतटी रीश। ने ठाँकी घुर त्र्यानमा, रहे जोयण पण्यीश ॥^{५३॥} गुण की भा माने नहीं, त्र्यवयुण मांकी मूल । ने नर सगति ठांकिये, पग पग मां घासूख ॥७॥॥ निहा को जे जापणी, ते जीवो जगमांय । मा मा भाए परतलां, पते हाभागति जाय ॥११॥ र मात्र मात्र थाए रादा, गुणवतना निज्ञदीस । र एक्कि करी में घणं, जगमां को कि वरीस ॥७६॥ र उर दुर्बन किस जाणिये, जब मुख्यों हो बाण । र १८ मुद्र राष्ट्र खंद्र छुनेन निपनी स्त्राण ॥११॥



रे जीव सुण तु वापका, म करिश गर्व गंवार। मृल स्वरूप देखी करी, निज जीवशुं तुं विचार ॥७६। कमें को नवि वृटिये. इंड चंड नरदेव! राय राणा मंमलिक वली, अवर नरज कुण हेव ॥^{09॥} वरस दिवस घर घर नम्या, आदिनाथ नगवंत। कर्म वजे द्रम्य तिलेखद्यां, जे जगमां यखवंत ॥ जणा पान जिलंड प्रतिमा रहि, उपसर्ग कियो सुरिंड ने उपमगेने टालियो, पद्मावति धरलेंड ॥७९॥ माने मीता पालिया, चरणे रांधी खीर। ते निर्मे नमरो, नोविसमो श्रीवीर ॥ए०॥ मती माता तप करी, पाम्या स्त्री व्यवतार । मग्यि रोधी में गाकरी कर्मनो एड प्रकार ॥णशा क्षत्र जिल्लामाणि, जनत नरेनार नाय । ८८ मिर अस्मानियोः त्याज समे कहेवाय ॥^{००}॥ - ४ - धं च वर्षित जेदनो विषमो वंध । र १९८८ । ३३४७ सोत वस्त क्षेत्र श^{ल्डा}।



पांचशे रामा तजी, लीधो संयम जार। द्रा द्रा नंदिपेण बुजवी, नर कोश्या दरवार ॥१०१ वांधी तांतणा सूत्रना, विंट्यो आईकुमार। सुन मोहनी वहा रह्यो, पठि लियो संजम जार ॥१०३ पंचसया मुनि नेमना, और श्रीपासना वार। जांग कारण संयम तजि, मांड्यो तिणे घरवार ॥१०६ नवाणुं कोमी कंचन तजि, खोर तजि खाठे नार। ते टुःकर नित वंदिय, श्रीजंबू त्रण काल ॥रण्य। एक कन्या को की कंचन, तिज जे ले विल हर। वयरस्वामि ते वंदीये, नित ऊगमते सूर ॥१०६। नवाणुं पेटी सुरतणी. नित नित होय निर्माख्य नरतव सुरसुख जोगवे, ते शालिजङ कुमार ॥१०९ रन्न कंवलने कारणे, श्रेणिक खाद्यो वार । गोप यकी बोली रह्यो, लीयो संजम नार ॥१००॥ त्यात नारी जेले तजी, ते धन्नो धन धन्न । नारी दाम्य संयम लीयो राज्यु जाम जिले मझ।?

वंदी वीर गुमानशुं. दशार्णजङ नर्गसंह ।

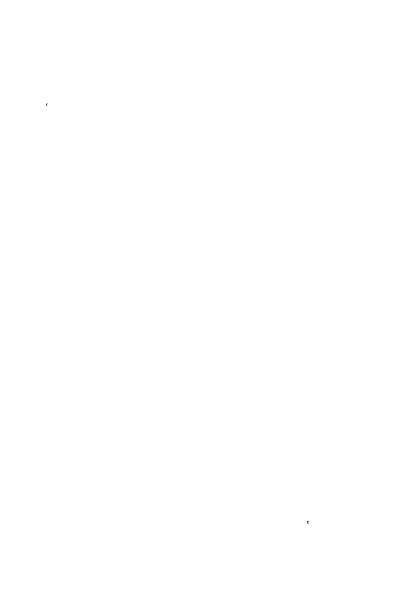
सुरपति पाय लगा ियो, जग राखी जिए लीह १३४॥ प्रसन्नचंड काउसग्गमां, कोपी युद्ध करंत। कोप शम्यो केवल लह्युं, मोहटो ए गुण्वंत ॥१३५॥ च्यइमतो सुकुमाल मुनि, वखाएयो वीर जिएंद। इरियावही पिकक्रमतां, केवल लह्यं आएंट ॥१३६। वीरजिनवचने थिर रह्यो, श्रेणिक सुत मेघकुमार। जातिसमरण पामियो, करि दो नयणां सार॥१३९॥ हाट वेचाणी चंदना, सुन्नजा चह्युं कलंक । दमयंती नखिवयोग खह्या, एह कर्मनो वंक ॥१३० कलावती कर वेदिया, झोपदी काट्यां चीर। ऋग्नि शीतल सीता कस्त्रो, शील गुणे थयुं नीर ^{१३} चंदना चरण मृगावती, खमावि निज अपराध[ा] केवल लहि गुरुणी दियों, दोजीव टल्यो विषवाद^{१४} चंद कलंक सायर कर्यों, खारो नीर किरतार।

नवसो नवाणुं नदी तणो, देखो ए जरतार ॥१४१

वान विषय वर्ष भवना, प्राप्त । । । । । । पर स्वयाण को अन्यन्ति।, गरान क्षा उपाणिणा वान सुपाने वीजिंग, तम प्राथनी सीर पाम। सुम संपनि छिड़िने पणी, मणि मोती ने नार॥गाय भन्नो सारापित जुता, घत तोत्रगर्ण मृति हा^{ल ।} दानप्रनावे जीवको, प्रथम हो। पादिनाथ॥१॥१॥ दान दियो धन सार्यी, लानंद हुएँ छपार। नेमनाय जिनवर हुवा, यादव कृल गिणगार॥१॥३॥ कलश्रीकेरा रोटला, दीपुं मुनिवर दान । वासुष्ड्य जब पाठले, जिनषद खर्ष्यं निदान ॥१५४

मुनी मख्यो एक मारगे, वोहराव्या तस छाहा^{र।} साय महयो ते सार्थी, ते बीर जगदाधार ॥१५५॥।

सुलसा रेवति रंगद्यं, दान दियो महावीर। तीर्थकर पद पामशे, बहेशे ते नवतीर ॥१५६॥ दाने जोगज पामिये, शियले होय सोजाग । तपकरिकर्मज टाखिये, जावना शिव सुख मांग^{१५९}



निण गरने होट नीतरों, नम हो गारीना ! पत्री मरी जाते तो रंड, मा सम सो शिण ए जा ॥११॥ महिद्या तस्य पंचावने, करिंग निर्वात ॥ पंचीनरे वरम पने, याण् प्रम य ति ॥ उ० ॥१०॥ जिमणि कूखे नर परें। निम पामी नार ॥ परें। नपुंसक जाणिये, जिनवनने निनार ॥ ए० ॥१३॥ ह्वेसामान्य पणे इहां, चाह्या गर्नातास ॥ सात-दिवस ऊपर रहे, नरगित नवमास ॥ उ० ॥१४॥ ञाठ वरस निर्यच् रहे, उक्त्रष्टो काल ॥ गर्नावाः से जोगव्या, इम बहु जंजाल॥ उ०॥ १५॥का-र्मणकाये करि लीयो, पहिलो ने त्र्याहार ॥ शुक्र-अने शोणित तणो, नहिं जूग लगार ॥ उ० ॥१६॥ -पर्यापित पूरी नहीं, तिहां विसवा वीश ॥ तिणे आहारे तनु ययो, ओटारिक अरु मीस ॥ उ०॥ ४७ ॥ पवन छावे उदरथकी, ते उपजावे छंग ॥ ाग्नि करे थिर तेहने, जल सुरस सुरंग ॥ उ^{० ॥}

त्यावमे माने नीपनं, एम सहत शिर वेढन सहे, जंपे थ्री जिन र्न शोणित गुक्र संबेपमाः बत्ने व पित्त कफ गर्न में. ए याये इण र मात नणी इंटी लगे. वालकतुं । हार तणो तिहां, आवे ननकाल जननी ले ब्याहार ते. जाए नामे इंड्री नख चख वधे, तिम मज्जा ॥ ३० ॥ सिविद्धं खंगे जल्लसे. रू कवल छाहार करे नही, गर्ने इस ॥३१॥ ते गर्ने किए जीवने, याय अथवा अवधि कही जिये, तिए उ० ॥ ३२ ॥ कटक करी वैक्रियप जाय ॥ को जिनवचन सुणी करीं थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ उंधे मुखे गुरु वहु पीम ॥ दृष्टि आगल विहुं हः काम विकार ॥ उ० ॥ ५० ॥ जिए थानक तुं-जपन्यो, तिएमें मन जाय॥ चोथे दशके धन-तणा, करे कोिम जपाय॥ उ०॥ ५१॥ पहोतो-द्शके पांचमे, मनमां ससनेह ॥ वेटा वेटी ने-गोतरा, परणावे तेह ॥ उ० ॥ थर ॥ ववे दशके-प्राणियो, वसी परवश थाय ॥ जरा छावी यौवन-गयुं, तृष्णा तोय न जाय ॥ उ० ॥ ५३ ॥ स्राज्यो-दशके सातमे, इवे प्राणी तेह ॥ वल जांग्युं बूढो-थयो, नारी न घरे नेह ॥ उ० ॥ यथ ॥ आठमे-दशके मोसलो, खुलीया सहु दांत॥ कर कंपावे-शिर घुंणे, करे फोकट वात ॥ उ०॥ एए ॥ नवमे-दशके प्राणियो, तन शक्ति न कांय ॥ साले-वचन सह तणां, दिन जूरतां जाय ॥ उ० ॥ ५६॥ साट पड्यो खूं खूं करे, सुगालो देह ॥ हाल-किम हाले नहीं, दिये परिजन ठेह ॥ उ० ॥ ५३ ।। श्रांख गले वे पम मिले, पमे मुहमे लाल । संसारनां सुख जोगवी, ते खहे जवपार ए॥ श्रीरत्नह्षेसु शिष्यरंगे, इम कहे श्रीसार ए॥ ११॥॥

इति मर्भवेदी । जीवनी उत्पत्तिनुं स्ततन संपणे ।

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंज ॥ हवे राणी पदमावती, जीवराशि खमावे॥ जाण पणुं जग ते ज्ञांतुं, इण वेला ह्यावे ॥ १॥ ते मुज मिच्ठामि दुक्कमं, अरिहंतनी साख॥ ज में जीव विराधिया, चर्जराज्ञी लाख ॥ ते० ॥ १॥ सात खाख पृथिवीतणा, साते अप्काय ॥ सातः लाख तेजकायना, साते वली वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति, चोदह साधारण ॥ वीति ' चर्जारेदी जीवना, वे वे लाख विचार ॥ ते०॥४॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ चव दह लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी ॥तेण॥ या इण जवे परजवे सेवियां, जे पाप खढार॥ त्रिविधः

त्रिविध करी परिहरुं, छुर्गतिनां दातार ॥ तेणा६॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोख्या मृपावाद ॥ दोप श्रदत्तादानना, मेथुन जन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परि-यह मेख्यो कारिमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोज में कीया, वली राग ने द्वेप ॥ तेव ॥ ए ॥ कसह करी जीव इ्हच्या, दीधां कूमां कलंक ॥ निंदा की धी पारकी, रति अरित निशंक ॥ ते० ॥ ए ॥ चामी कीधी चोतरे कीधो थापण-मोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनोः जलो श्राएयो जरो सो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने जवे में कीया, जीव नानाविध घात ॥ चनीमारजवे चरकलां, मास्या ' दिन रात ॥ ते०॥ ११ ॥ काजी मुख्लाने जवे,पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक फन्ने कीया, कीधां पाप अघोर ॥ ते० ॥ ११ ॥ माठीने जवे माठलां. जाख्यां जखवास ॥ धीवर जीख कोली जवे, मृग पाड्या पास ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने जवे में

कीयाः नाक्य करत्व ॥ नंदीनान मगीयाः कोरका तकी दंग॥ वेण॥ १८॥ गरमाभागीन तवे, दीभां नारकी छःस ॥ वेदन नेवन वेदनाः नायन अनि निम् ॥ नेव ॥ १ए ॥ क्ंनाम्ने नने-में किया, नीजान पनाव्या ॥ नेली जबे निल पीलिया, पांप पिंक जराव्या ॥ ते० ॥ रह ॥ हाली जवे हल खेरीयां, फाटमां पृथ्वीनां पेट ॥ स्र निदान घणां किया, टीधां घलद चपेट। तेण ॥ १९ ॥ मालीने जवे रोपिया, नानाविध वृक् ॥ मृल पत्र फल फ़्लनां, लागां पाप ते लक् ॥ तेण ॥ १७॥ अधोर्वाईयाने जवे, जम्या अधिका जार॥ पोठी पूरे कीमा पड्या, द्या नाणी लगार ॥ते० ॥ १ए॥ ठीपाने जवे ठेतस्या, की धां रंगण पास ॥ अग्नि आरंज कीधा घणा, धातुवाद अज्यास॥ तेण ॥ १० ॥ शूरपणे रण जूकता, मास्यां माण-सबृंद ॥ मदिरा मांस माखण जख्यां, खाधां मूल

ने कंद् ॥ ने० ॥ २१ ॥ म्बाण खणाबी धातुनी, पाणी उद्खेच्यां ॥ श्रारंत कीधा श्रतिघणा, पोते पापज संच्यां ॥ ने० ॥ २२ ॥ कर्म श्रंगार कीया वली. ट्रमें ट्व दीधा ॥ तम खाधा वीतरागना, कृमा कोसज कीथा॥ नेव ॥ २३ ॥ विद्वीजवे जंदर खीया, गिरखी इत्यारी ॥ मृह गमार तणे नवे, में जु लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ नामजुंजा तणे जवे, एकंडिय जीव ॥ ज्वारि चणा गहूं शे-किया, पार्नतां रीव ॥ ते० ॥२५॥ खांमण पीसण-गारना. आरंज अनेक॥ संधल इंधल अग्निनां कीथां पाप उद्देक ॥ ते० ॥ १६ ॥ विकया चार कीथी वली. सट्या पांच प्रमाद ॥ इष्टवियोग पाड्या कीया, कदन विषवाद ॥ ते०॥ २०॥ साध श्रने श्रावक तणां, वन बहीने नांग्यां॥ मृब श्रने उत्तर नणां, मुक ह्पण लाग्यां ॥ त०॥ १० ॥ साप वीठी सिंह चीवरा, शकराने समली॥ हिंसक

जीव तमो जवे, हिंसा कीभी समली ॥ नेनाएणा स्वावकी ह्रपण घणां, वली गर्न गलाव्या ॥जी-वाणी ढोल्यां घणां. जील वन जंजाव्यां ॥नेणा३ण। नव अनंत नमतां प्रकां, की धा देद संबंध॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिण्छुं प्रतिवन्ध ॥ तेष ॥ ३१ ॥ जब अनंत जमतां श्रकां, कीधा परियह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी बोसिरुं, तिणशुं प्रतिवन्ध ॥ तेण॥ ३२॥ जव त्र्यनंत जमतां थकां, कीधा कुटुंवसंबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिण्जुं प्रतिवंध ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इणि परे इहजव परजवे, कीधां पाप द्यखत्र॥ त्रिविध त्रिविध करि वोसिरुं, करुं जन्म पवित्र ॥तेण।३॥। एणि विधे ए आराधना, जावे करशे जेह ॥समय सुंदर कहे पापथी, वली बूटशे तेह ॥ ते०॥३५॥ राग वेरामी जे सुणे, एह त्रीजी ढाल ॥ समय सुंदर कहे पापथी, हुटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३६ ॥

॥ अथ श्री इमान्त्रीशी प्रारंत्र॥

श्रादर जीव कमाग्रण त्रादर, म करिश रागने द्वेप जी ॥ समताये शिव सुख पामीजे, कोधे क्रगति विशेष जी ॥ आ० ॥ १ ॥ समता संजम सार सुणी जे. कब्पसूत्रनी साख जी॥ कोध पूर्वकोिक चारित्र वाले, जगवंत इणी परे नाख जी ॥ त्राण ॥ १ ॥ कुण कुण जीव तस्या जपसमयी, सांजल तुं दृष्टांत जी ॥ कुण कुण जीव जम्या जवमांहे, क्रोध तणे विरतंत जी। श्रा०॥ ३॥ सोमल ससरे शीश प्रजाब्युं, वांधी माटीनी पाल जी॥ गजसुकुमाल क्रमा मन धरतो, सुगति गयो ततकाल जी ॥ त्र्याण ॥ ४ ॥ कुलवालुत्रो साधु कहातो, कीधो क्रोध अपार जी ॥ को णिकनी गणिका वश पिनयो, रमविनयो संसार जी ॥ आ० ॥ ए ॥ सोवनकार करी अति वेदन, वाध्रद्युं वींटियु शीश जी ॥ मेतारज रूपि

मुक्ति पोहोतो, उपराम एह जगीरा जी ॥ आण ॥ ६॥ कुरुम वुरुम वे साधु कहाता, रह्या कुणाला खाल जी ॥ क्रोध करी ते कुगते पहोता, जनम गमायो आल जी ॥ आ०॥ ७॥ कर्म खपावी मुगते पहोता. खंधक सूरिना शिष्य जी ॥ पालक पापीय घाणी पीट्या, नाणी मनमां रीश जी॥ ञाण ॥ ए ॥ अचंकारी नारो अचुकी, त्रोड्या पीयुगुं नेह जी॥ वब्बर कुल सह्यां डुःख बहुलां. कोभ तणां फल एह जी॥ आ०॥ ए॥ वाघण र्मा गरीर विद्युग्यु, ततक्षण ठोड्यां प्राण जी॥ माभु मुक्तेशल जिब सुख पाम्या, एह इसा गुण जाण जी ॥ त्या०॥ १०॥ कुण चमाल कहीजे । विटमें, निरित नहीं कहे देव जी ॥ कृषि चंमाल महीय वमतो, टालो वेडनी देव जी॥ आ०॥ ११॥ मानमी नम्क गयो ने ब्रह्मदत्त, काही अदार यांच जी॥ क्रोध नणां फल कमुयां

जाणी, राग हेप यो नाख जी ॥ श्रा० ॥ र१ ॥ संधक क्षिनी खाल जतारी, सह्यो परिसह जेण जी ॥ गरजवासना छुःखथी तृट्यो, सवल कमा गुण तेण जी ॥ छाठ ॥ १३ ॥ कोध करी खंधक छाचारिज. हुओं छिनिकुमार जी ॥ दंसक नृपनो देश प्रजा-ह्यो. जसरो जबह मकार जी॥ घ्या०॥ र४॥ चंड-रोंड छाचारिज चलतां, मस्तक दीध प्रहार जी॥ क्सा करंनां केवल पाम्यो, नव दी क्षित अणगार-जी ॥ श्रा० ॥ १५ ॥ पांच बार इपिने संताप्या. श्राणी मनमां द्वेप जी ॥ पंच नव सीम दह्यो नंद नाविक, क्रोध तणां फल देख जी ॥ आ० , ॥ १६ ॥ सागरचंदनुं शीस प्रजाली, निशि नज-सेन नरिंद जी ॥ समता जाव धरी सुरलोके. प-हुतो परमानंदजी ॥ त्रा० ॥ र७॥ चंदना गुरुणीय घणुं निचंत्री, धिग् धिग् तुज अवतार जी ॥ मृगा-वती केवलिसिर पामी, एह इतमा अधिकार जी

॥ त्राव ॥ १० ॥ सांव प्रत्युम्न कुंवर संताप्यो, कृष्ण द्वैपायन साह जी ॥ क्रोध करी तपनुं फल हास्त्रो, कीधो द्वारिका दाह जी॥ आ०॥ १ए॥ त्ररतने मारण मूठी जपामी, वाहूवल वलवंत जी ॥ जपशम रस मनमांहे आणी, संजम ले मति मंत जी ॥ व्या० ॥ २० ॥ कानसग्गमां चिमयो श्रतिकोधे, प्रश्नचंद्र क्रपिराय जी ॥ सातमी नरक तणां दल मेल्यां, करुआं तेण कपाय जी॥ ञा०॥ ११॥ ञ्राहारमांहे कोधे क्रिष धृक्यो, आएयो अमृत नाव जी ॥ कूरगमुये केवल पा-म्युं, क्मातणे परनाव जी ॥ त्याव ॥ ११ ॥ पार्श्व-नाथने जपसर्ग कीथा, कमठ जवांतर धीठ जी॥ नरक तिर्यच तणां इःख लायां, क्रोध तणां फल दीव जी ॥ आ० ॥ १३ ॥ क्मावंत दमदंत मुनी-श्वर, वनमां रह्यो काजसम्ग जी ॥ कौरव कटक हण्यो ईटाले, त्रोड्या कर्मना वर्ग जी ॥ आ०॥

१४॥ सय्यापालक काने तरुष्ठो, नाम्यो क्रोध उदीर जी ॥ वेहु काने खीला ठोकाणा, निव बृटा महावीर जी ॥ था० ॥ १५ ॥ चार हत्यानो कारक हुंतो, दृढप्रहार छतिरेक जी ॥ कमा करीने मुक्ते पहोतो. उपसर्ग सद्या अनेक जी ॥ था। ॥ १६ ॥ पहुरमांहे उपजतो हास्त्रो. क्रोधे केवल नाण जी ॥ देखो श्रीदमसार मुनीशर, सूत्र गुएयो जनाए जी ॥ त्या ।। १९॥ सिंह गुफावासी कृषि कीधो. शृखिजङ कपर कोप जी॥ वेश्या वचन गयो नेपाले. कीधो संजम लोप जी ॥ श्राण्॥ २०॥ चंद्रावतंसक काउसग्ग रहियो, क्मा तणों जमार जी॥ दासी तेल जस्बो निशि दीवो, सुरपदवी बहे सार जी ॥ व्या० ॥ २ए ॥ इम छानेक तर्या त्रिजुवनमें, इतमागुण जिव जीव जी ॥ क्रोध करी कुगते ते पहोता, पानंता मुख रीव जी ॥ घ्या० ॥ ३० ॥ विप हालाहल कहीये

विरुष्ट्यो, ते मारे एक बार जी ॥ पण कपाय अनंती वेदा, आपे मरण अपार जी॥ आ०॥ ३१ ॥ कोध करंतां तप जप कीधां, न पमे कांई ग्राम जी ॥ आप तपे परने संतापे, क्रोधशुं के हो काम जी ॥ आ० ॥ ३१ ॥ क्तमा करंतां खरच न लागे, जांगे क्रोम कलेश जी॥ अरिहंत देव खाराधक थाये, व्यापे सुजस प्रदेश जी ॥ खा^o ॥ ३३ ॥ नगरमां है नागोर नगीनो, जिहां जिनवर प्रासादजी ॥ श्रावक लोक वसे छिति सुखिया, धर्मतणे परसाद जी ॥ छा० ॥ ३४ ॥ क्मा ठत्रीशी खांते कीधी, आतम पर उपगार जी ॥ सांजलतां श्रावक पण समज्या, जपराम धर्यों खपार जी ॥ खा० ॥ ३५॥ जुगप्रधान जिणचंद सूरीशर, सकलचंद तसु शिष्य जी ॥ समयसंदर तसु शिष्य जाणे इम. चतुर्विध संघ जगीश जी ॥ ३६॥

इति क्षमाछत्रीशी ।

(gu)

ग्रंय श्री वंधकम्निगजनु चेहिलियुं ॥ ॥ यान १ सी ॥ नमृं चीर ज्ञानन घणी जी. गणघर गोयमं म्बान ॥ क्या व्यनुमार गायको जी, वंधकना गुण्याम ॥ १॥ कमावेन जीव तगवेतनु जी इतन ॥ ए प्रांकणी ॥ व्यनि दामा प्राधिकी करी जी, संजम धारी जी जान ॥ शिवमारगंन कारण ती. रहेना धरमने त्यान ॥१॥ ज्ञा ॥ त्या इतारी देहनी जी. ग्हेंता ममताजी जाव ॥ जिनधमें कीधो दीपता जी, महोटा ए मुनिराव ॥३॥ क्षण ॥ सावत्यी नगरी ज्ञानती जी, कनकंग्लु निहां ज्य ॥ राणी मलयासंदरी जी, वंभक कुंबर छान्य ॥ ४॥ ६० ॥ सघला श्रेग सुंदर् जी. इंडी नहीं एक हीण ॥ प्रथम वयं चहती कला जी. चतुर कला प्रवीण ॥ ए॥ हा ॥ विजयमेन गुरु ग्रावीया जी, साधु तरे

कुं०॥ सं०॥ उत्तर पमुनर बहु हुना जी, बाप वेटानेजी साय ॥ सुत्रमांहे विस्तार तेजी. हेजो चतुर लगाय ॥ ३३ ॥ कुं० ॥ सं० ॥ चिन्छं दीधी त्राङ्गा जी. करी महोटे मंमाण ॥ जिविकामां वेसामीने जी, सोंप्यो साधुने ब्याण ॥३४॥ क्०॥ इप्र अत्यन्त वालो हुतो जी, स्वामी महारे ए पुत्र ॥ मरियो जामण मरणथी जी. सोंप्यो तुम कर सुत ॥ ३५ ॥ क् ॥ सिंहपणे वत छाटरोजी, पालजो सिंहनी जेम ॥ घणुं पराक्रम फोरजोजी, मात पिता कहे एम ॥ ३६ ॥ इ० ॥ इम शीखा-मण देइ करी जी, श्राया जिल दिशि जाय ॥ खंधकने जले जावशूं जी, दीका दीनि मुनि[.] ' राय ॥ ३७ ॥ कः ॥ आज्ञा मांगी साधु तणी जी, सूत्र अरथ खिया धार ॥ जिन कलपी पणुं श्रादर्श्युं जी, एकलमल श्राणगार ॥ ३० ॥ क्र^{० ॥} मिलि शिरदार रायने कह्यं जी, ए नानिकयो

जी वाल ॥ सिंहादिकना जय तणा जी, करवावो रखवाल ॥ ३७॥ क०॥ पांचशे जोधा
वोलावीने जी, दीया कुंवरनेजी लार ॥ ते साधु
ने खवर नाहिं जी, साथे वहे शिरदार ॥ ४०॥
क०॥ सावित्य नगरीशुं चालियो जी, कुंती
नगरी जी जाय ॥ नगरी वहिनोई तणी जी,
शंका न आणी कांय ॥ ४८॥ क०॥

॥ दोहा ॥

पांचशे तिण श्रवसरे, खावा पीवा काज।
वली वली चलता रह्या, एकल रह्या मुनिराय ॥१॥
हवे किम जठे गोचरी, उपसर्ग व्यापे केम।
पक मना थइ सांजलो, मुनि करे ठे जेम॥ १॥

॥ हाल १ जी ॥

तिण अवसर मुनिराय, कुंति नगरीमांहे. सुकोमल साधु ॥ विहरण विरियां पांग्रस्या ॥ १॥ वाजे खुवर काल, दाके पग सुकुमाल ॥ सु०॥

तणों ए ॥ ११ ॥ माठ्ठं विचारी राय, मसाण नूमि ले जाय ।। सु॰ ॥ त्वचा जतारो एहनी ए ॥ १**१** ॥ राजा नफर बोलाय, वेगा जावो धाय ॥ सु०॥ इण साधुने पककी लीयो ए॥ १३॥ मत करजो कांइ कांण, वे जायजो समसाण ॥ सुण। सघली खाल जतारजो ए॥ १४॥ नफर सुणी इम वाण, करी लीधी परमाए ॥ सु० ॥ श्रजाएचक राजा-यने ए॥ १५॥ पकड्या मुनिना हाथ, मसाण जूमि ले साथ ॥ सु०॥ खाल उतारवा देहनी ए॥ १६॥ माहरो नही वे दोष, मुनि म करो कोइ रोप ॥ सु॰ ॥ करप्या क्रपज समीकरे ए, ॥ १९ ॥ मसाण जूमिका मांय, काया दीधी वो-सिराय ॥ सु॰ ॥ चारूं आहार त्यागी दीया ए ॥ १७॥ करको स्त्रावी वन्यो काम, न कह्यं स्त्रा-पणुं नाम ॥सुन। सगपण को दाख्युं नहि ए॥१ए॥ राख्यो समता जाव, संजम ऊपर चाव ॥ सु० ॥

मने करीने मोख्या नही ए॥ १०॥ तीखा पाठ-णानी धार, मसतक ऊपर प्रहार ॥ सु०॥ खाल उतारी देहनी ए॥ ११॥ पगां सूधी खाल. रहिता संजममां जाल ॥ सु०॥ नाके सल घाट्यो नही ए॥ ११॥ रह्या ते रूमे ध्यान, पाम्या केवल ज्ञान ॥सु०॥ करम खपावी मुगते गया ए॥ १३॥ केवल महिमा होय, धन धन करे सहु कोय॥ सु०॥ जिनमारग कियो दीपतो ए॥१४॥

॥ दोहा ॥

कुंती नगरीनी मध्ये, हुवोज हाहाकार। देखो राय मरावीयो. विना गुने छाणगार॥१॥ लोक हुवा सहु छागला, जोर न चाले कोय। मुनिने मोक्त सिधावणो, पण वेर न ठोके कोय॥१॥ किम वूजे पांचशे सुजट, विल राणि ने राय। वेर खवर किण विध पके, ते सुणजो चित्त लाय॥३॥

(44)

॥ ढाल त्रीजी ॥

धरम हिये धरो ॥ ए देशी ॥ हजी साधु श्रायो नहीरे, जोवे पांचशे वाट ॥ जलामण दीनी रायजी रे, क्षण क्षण करे जचाटो रे॥ धन्य महोटा मुनि॥ नित्य कीजे गुण यामो रे॥ घ० ॥ सीके सघलां कामो रे ॥ १ ॥ घ० ॥ नगर गली फरी जोयता रे, किहांइ न दीठो रे साथ॥ सुएयो साधु मास्त्रो गयो रे, तव परमारथ लाधो रे ॥ १ ॥ ध० ॥ राजा पूछे कुण तुमे रे. तव वलता कहे जोध ॥ कनककेतुना रजपूत मं रे, तुमे करी बात अयुक्तो रे ॥३॥४०॥ खंधक कुंबर दीका लेइ रे, अमे रखवालाजी बार ॥ सो मुनिवर ते मारीयो रे, न सरी गरज लगार रे ॥ ४ ॥ घ० ॥ वचन सुणी जोघा तणां रे, राय डुवो दिलगीर ॥ हाहा पाप जामां कीयां रे, मास्त्रो राणीनो वीर रे ॥ ५ ॥ घ० ॥ राणी

वात सुणी तिसे रे. लागो मरम प्रहार ॥ मृर-वागत धरणी ढलीरे. ब्टी आंसूमानी धार रे॥ ६॥ ध०॥ वंधव जव सफलो कीयो रे, तोड्या मोहना रे फंद ॥ हुं पापणी किम तृटशुं रे, इम ते करे आकंद रे॥ ७॥ घ०॥ लोहीये खरमी मुह्पती रे, समली महेलमां राल ॥ वहिन सुनंदा देखीने रे, जठे मोहनी जाल रे॥ ए॥ थण॥ जिम जिम जाइ सांजरे रे, आणे रागने द्रेष ॥ वीरा वेगो आवजे रे, हुं नजरे लेखं देख रे ॥ ए ॥ घ० ॥ कुण वीरो कुणवहिनकी रे, जो जो मोहनी वात ॥ इण जब मुगति सिधावणुं रे, एम करे विलपात रे॥ १०॥ ध०॥ इम जाणी ने मानवी रे; मोह न करशो रे कोय ॥ मोह कियां दुःख जपजेरे, करमवंध वह होय रे ॥११॥ ॥ घ०॥ सालो सगो नवी जाणीयो रे, तपसी महो-टो रे साध ॥ पुरुषासिंह राजा कुरे रे, वहोत लग्यो

श्रपराध रे ॥ ११ ॥ ध० ॥ पांचशे जोधा इम चिंतवे रे. मस्यो गयो मुनिराय ॥ कनककेतु राजा कने रे, कांइ कहेशुं तिहां जाय रे ॥ १३ ॥ ध० ॥ चारित्र ख्यो हवे चोंपशुं रे. किसो सास वीशवास ॥ काल कितो इक जीवणो रे, राखो मुगतिनी श्राश रे ॥ १४ ॥ घ० ॥ निश्चे करी संजम लीयो रे, पांचशे जोधा शिरदार ॥ चोखो पाली सुरगति लही रे, विल करशे जव पार रे ॥ १५ ॥ घ० ॥

॥ दोहा ॥

ह्वे राजा मन चिंतवे, एहवुं खून न कोय। साधु मारण मन ऊपनुं, ए संशय वे मोय॥१॥ १ इम विचारी वंदण गयो, साधु जणी कहे एम। विणा गुनहे महोटो मुनि, मे मास्यो कहो केम॥१॥

॥ ढाल ४ थी ॥

वीर सुणो मोरी विनति ॥ ए दशी ॥ साधु कहे राय सांजलो, तूंतो हूतो हो काचरनो जीव ॥ ए संधक मानव हुतो, चतुराई हो धरती रे अतीव ॥ सा० ॥ १ ॥ करम न होने केहने. त्रीखारी हो कुंण राणो राव ॥ कुंण साभुने कुंण चोरटो. जला जुंमा हो सह होवे जाव ॥ २ ॥कणा पिठला जब इण खंधके, ऊतारी हो काचरनी खाल ॥ विचलो गिर काहामी लियो सरायो हो घणी करिय कितोल॥३॥क०॥पठेहि पठतायो नहीं, वंध पिनयो हो तिए रे उए ठाय ॥ तिए करमे करी खालकी, जतारी हो तें साधूनी राय ॥ ४ ॥ क० ॥ वचन सुणी राय करपीयो, करमोनी हो घणी विपमी वात ॥ राय राणी दोनू कहे, घरमांहे हो घमी अफली जात ॥ य ॥ क० ॥ पुरुषसिंह राजा तिहां सुनंदा हो राणी सुविनीत॥ राज होमी चारित्र लियो, आराध्यो हो दोनुं रूमी रीत ॥ ६ ॥ क० ॥ करम खपावी मुगते गयां. वधारी हो जग धरमनी सोह॥ अजर अमर सुख शास्त्रतां, एहवी करणी हो करजो सह कोय ॥ ३॥ क०॥ श्रदारशे इंग्यारोनरे, चेत्र मासे हो शुद्धि सानम जोय ॥ लामणे गाम सृखी सदा. श्रीतो श्रधिको हो सिच्छामि फुक्कस्टोय ॥॥क०॥ ॥ और श्री संश्व मृन्तिं चौशियं कर्णे ॥

॥ द्रांद्रा ॥ नकल निक्कि दायक सटाः वीद्रां जिनस्य ॥ मह्युक्त मामिन नरम्बनि, प्रेमे गम्रं पाय ॥ १ ॥ त्रितुवनपनि त्रिशला नणोः इन गुण गंजीर ॥ शासन नायक जग जयोः हेमान वन वीर ॥ १ ॥ इक दिन वीर जिणे-ते. चरणे करि परणाम ॥ त्रिक जीवना हिन गी, पूर्व गोनम स्वाम ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग त्रारा-ये, कहो किण परे श्ररिहंत ॥ मुधा सरस नव यन रस, जांस्त्र श्रीजगवंत ॥ ४ ॥ श्रांतिचार

परी बहुमान ॥ सूत्र ग्रार्थ तज्ज्ज्य करी स्थां, जणीय वही उपधान रे॥ १॥ प्राणी ॥ झाव ॥ इानापकरण पाटी पोत्री. नवणी नोकरवाली॥ तेह तणी कीधी आशातना, झान जिक्त न संजाली रे॥३॥ प्राणी॥ ज्ञा०॥ इत्यादिक विपरीतपणायी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ त्र्या जव परनव विखय नवोनव, मिठाजुक्तम तेह रे ॥ ४॥ प्राणी समिकत ख्यो शुरू जाणी॥ ए व्यांकणी॥ जिनवचने शंका निव कीजे, निव परमत छाजि-साख ॥ साधुतणी निंदा परिहरजो, फलसंदेह म राख रे॥ ए॥ प्राणी॥ स०॥ मृहपणुं ठंको परशंसा, गुण्वंतने स्त्राट्रिये॥ साहामीने धर्मे करी थिरता, जिक्त प्रजावना करीये रे॥ ६॥ प्राणी ॥ सव ॥ संघवेत्य प्रासाद तणो जे, स्प्रव-र्णवाद मन खेल्यो ॥ इत्य े क्यो, विणसंता छवेख्यो रे

इत्यादिक विपरीत पणापी, समकित संक्युं जेह ॥ त्या तवण ॥ मिठाण ॥ ७ ॥ प्राणीचारित्र ह्यो चित्त आणी ॥ ए आंकणी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, ब्याठे प्रवचन माय ॥ साधुतणे धर्मे परमादे, अशुक्र वचन मन काय रे॥ ए॥ प्राणी ॥ चा० ॥ श्रावकने घमं सामायिक, पोस-ह्मां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे छाठे, प्रव[.] चनमाय न पाली रे ॥ १० ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ इत्याः दिक विपरीतपणाथी, चारित्र मोट्युं जेह ॥ आ जव०॥ मिहा० ॥ ११॥ प्रा०॥ चा०॥ बारे जे दे तप नवि की धुं, ठते योगे निज शक्ते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविएं जगतेरे ॥ १२ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ तपवीरज छाचारे एणि परे, विविध विराध्या जेह ॥ आ जवण ॥ मिठाण ॥ १३ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ वलीय विशेषे चारित्र केरा, अति चार आलोइये ॥ वीर जिऐसर वयण

सुणीने. पाप मयल सिव धोड्ये रे ॥१४॥प्राणी॥चा०॥ ॥ डाल बीजी ॥ पामी सुग्रुरु पसाय ॥ ए देशी॥

॥ पृथिवी पाणी तेज. वाज वनसपति ॥ ए पांचे थावर कह्यां ए ॥ करि करसण श्रारंत्र, खेत्र जे से िमयां।। कृवा तलाव खणावीयां ए॥ १॥ घर आरंज अनेक टांकां जोयरां ॥ मेकी माल चणावीयां ए ॥ लींपण घुंपण काज, इली परे परपरे ॥ पृथिवी काय विराधिया ए ॥ २ ॥ धोयण नाइण पाणी, कीवण अपकाय ॥ ठोती धोती करी मृह्य्यां ए॥ जाठीगर कुंचार, लोह सोवन गरा॥ नामजुंजा विहालागरा ए॥३॥ तापण राकण काज, वस्त्र निखारण ॥ रंगण रांधण रस-वती ए ॥ इणी परे कर्मादान, परे परे केलवी ॥ तेज वाज विराधिया ए ॥ ४ ॥ वामी वन आराम वावि वनस्पति॥ पान फूल फल चूंटीयां ए॥ पोहोक पापमी ज्ञाक, शेक्यां शूकव्यां ॥ ढुंद्यां

तव सेही आय ॥ जे जिहांनी ने निहां गहीं जी. कोड़ न धावी साथ रे ॥ जिला ३ ॥ मिला स्यणीतोजन जे कथीं जी. की धां नव्य धानव्य ॥ स्सना रसनी लालचे जी. पाप कम्यां प्रत्यक रे ॥ जिला ॥ ४ ॥ मिला। जन लेड़ जिसारियां जी. वली जांग्यां पच्चम्काण ॥ कपटहेतु किरिया करी जी. की धां आप बखाण रे ॥ जिला थ ॥ मिला त्रण ढाल आते छहे जी. आलोया अतिचार ॥ शिवगति आराधन नणों जी. ए पहेलों अधि-कार रे ॥ जिला ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलकीनी देशी ॥
पंच महात्रत छादरा ॥ साहेलकी रे ॥
खथवा ख्यो त्रत वार तो ॥ यथाशक्ति त्रत छादरी
॥ सा० ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ त्रत लीधां
संजारीये ॥ सा० ॥ हियके धरिय विचार तो
शिवगति छाराधन तणो ॥ सा० ॥ ए वीजो

लिकार को ॥०॥ तीय लोकालिये॥ साला चंति चेत्राची सार्य वो ॥ सन व्यंत को सा इता । याः । जोड्यं येष न यम में ॥ ३॥ मार्ग विद्यासी निवासी । नारः निवासी सम् में ॥ गण देव तम दिल्लों प मात्॥ दीने इस पींच में।। ४॥ यामी मेप समापिं ॥ ताल ॥ के जपनी रच्छीति मी ॥ राज्यन करेंग की मानाने ॥ नाट ॥ ए जिन्नानन नीनि नी ॥ ।। नामिंग प्रने नामापिं ॥ नाम॥ एतम अभिने। सार तो ॥ तित्रनित त्याराधन नली ॥ सार्॥ म् जीजो श्राधिकार ने।॥ र॥ मृगाः याद हिला नेती ।। साव।। यन गर्ग सद्ध तो।। कीय मान माणा कृत्वा गनावा। प्रेम हेव पेतृत्व ने।।।।। निरा कलर न किलीय ॥ ना०॥ कृती न हीं जाल ना ॥ उनि लाउनि शिध्या नजी ॥ सार ॥ माया मोम जंजाल नी ॥ त॥ वि विध त्रिविध वोसिराचिये ॥ सात ॥ पापम्णान छढार तो ॥ शिवगति ज्याराधन तणो ॥ सात ॥ ए चोषो छिधिकार तो ॥ ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ ॥ हवे निःसुणी इहां आवीयाए ॥ ए देशी ॥

जनम जरामरणे करी ए. ए संसार असार नो ॥ कस्त्रां कर्म सहु अनुजवे ए. कोइ न राख-णहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध जगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए. साधु शरण ग्रणवंत तो ॥ २ ॥ त्रवर मोह सवि परिहरी ए, चार शरण चित्त धार तो ॥ शिव-गति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ जब परजब जे कस्त्रां ए, पाप कर्म केइ खाख तो॥ आत्मसाखे ते निंदीये ए, पिककिमये गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिध्यामित वर्त्तावियां ए, जे जांख्यां उत्सूत्र तो॥ कुमति

कदाबहुने वशे ए. वखी घाष्यां उत्सृत्र तो ॥५॥ घट्यां घनाव्यां जे घणां ए. घंटी हल हथीयार नो ॥ जब जब मेली मुकीयां ए. करता जीव नंदार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोपिया ए, जनम जनम परिवार तो ॥ जनमांतर पोहोता पठी ए, कोइ न कीधी सार नो ॥ ७ ॥ त्रा जब परजब जे करवां ए. इस श्रधिकरण श्रनेक तो॥ त्रिविध त्रिविध वोनिरावीचे ए. आणी हृद्य विवेक तो ॥ ७ ॥ डुःकृत निंदा एम करी ए, पाप कस्त्रां परिदार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए. ए विहा अधिकार तो ॥ए॥

॥ ढाल ठडी ॥

॥ श्रादि तुं जोड्ने श्रापणी ॥ ए देशी ॥

धन धन ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान ज्ञीयल तप खादरी, टाल्यां छुप्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ ज्ञेत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ गुगने जिनगर पत्तीपा, गर्धी पारवां पात ॥ ५० ॥ ७ ॥ पुम्तक हान लगातीयां, जिणहर जिणनेत्य ॥ संघ चतुर्विष साचव्याः ए सान स्त्रत्र ॥ ५० ॥ ३ ॥ पितक्रमणां सुपंर कर्माः अनुकंपा दान ॥ साधु सृरि चवनत्यने, दीधां बहुमान ॥ घ० ॥ ध ॥ भर्मकारज त्यन्नोडिये. इम बारोबार ॥ शिवगनि श्वागधन नर्णा, ए सानमो व्यधिकार ॥ घ० ॥ ए ॥ जाव जलो मन ञाणीये, चित्त ञाणी ग्राम ॥ समता नाव ना-वीये, ए त्र्यातमराम ॥ घ० ॥ ६॥ सुख ५:ख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे खाचर्यां, नोगविये सोय ॥ घ० ॥ ७ ॥ समना विण जे अनुसरे, पाणी पुएयनां काम ॥ ठार जपर ते लीपणुं, कांखर चित्राम ॥ ४० ॥ ७ ॥ जाव जली परे जावीये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार ॥ घण॥ ए॥

Farm strate of the contract of the Fire still a server in the process of the माना माणी पारा । समान महिन्द्राती, में सेला ! मन्त्रमात्र ॥ जानी क्रामी जन् भारपाल । सर नेतर ए एक बहुती नेते, किन्द्र है स्वाहर ॥१०० भीमनीने माली, माक्षांताका ॥ फणि भर फीटीने, अगर यह फुलमाल ॥ जिल्हासंग मीमी, मोजन प्रमी कीच ॥ इस मले मंत्रे काज घणानां मिक ॥ छ॥ म् दश नाभिकारे, नीर जिलेमर नाम्यो ॥ पामधन केमे, विधि जेले चितमां राष्यो ॥ तेल पाप पराछी, जब तय पुरे नाम्यो॥ जिन विनय करतां, सुमति असृत रस चाक्यो॥ ए॥ इति॥

।। हाल त्यानमी ॥ नमो जित्र जावनुं ए ॥ ए हेनी सिद्धारय राय कुलितलो ए, त्रिशला मात



इ स्व नियारण जग जयो।। भी भिर जिस स नरण श्रुणतां, व्यक्तिसन उत्तर प्रयोग १॥ श्री विस् देव सुरीत पटधर, नीर्रा बंगम इणि वंग ॥ नग गतपति श्री विजयप्रज्ञासि, सस्ति जसमग ॥ २ ॥ श्री हीरविजय सुरि जिल्य तानक, कीर्निः विजय सुर गुरु समो ॥ तस जिल्य वानक विनय-विजये. शुएयो जिन नोवी शमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत जगण बीबे, रही रांदेर चौमास ए॥ विजय दशसी विजय कारण, कियो गुण ऋज्यास ए॥४॥ नरजव त्यारा धन सिक्कि साधन,सुकृत लील विलास ए॥ निर्जग हेन तवन रचियुं, नामे पुएय प्रकाश ए ॥ ए ॥ इति श्री छाराधना रूप पुएय प्रकाशस्तवनं संपूर्ण ॥ श्रोक ॥ १२९॥

> ॥ अथ श्री शांतिजिनस्तवन ॥ धोलनी देशी ॥ शांति जिनेसर साहेच वदो, अनुजब रसनो

मुनिवर दंदी, जिन पिनमा मन रंगे रे ॥ शांतिण ॥ ॥ आर्यसुहस्ती सूरि उपदेशे, साचो संप्रति-रायरे ॥ सवाक्रोफ़ जिनविंव जराव्यां धन धन एहनी मायरे ॥ शांतिण ॥ ण ॥ मोकली प्रतिमा अजयकुमारे, देखी आड कुमार रे ॥ जाति समर्णे समिकत पामी, वरियो शिववधुसार रे

(98)

रणे समकित पामी, वरियो शिववधुसार रे ॥ शांति०॥ ए॥ इत्यादिक बहु पाठ कहा ठे, स्त्रमांहे सुखकारी रे ॥ स्त्रतणो एक वरण जस्थापे, ते कह्यो वहुल संसारी रे ॥ शांतिणारणा ते माटे जिन **ञ्चाणा धारी, कुमति कदा**ग्रह नि वारी रे ॥ जिक्ति तणां फल उत्तराध्ययने, बोध वीज सुखकारी रे ॥ शांति ।। ११ ॥ एक जवे दोय पदवी पाम्या, शोलमा श्रीजिनरायरे॥ मुक मन मंदिरिये पधरावो, धवल मंगल गवरायरे ॥ शांति ॥ ११ ॥ जिन उत्तम पदरूप अनुपम, कीर्ति कमलानी शालारे॥ जिन विजय कहे प्रज

जीनी त्रक्ति, करतां मंगल माला रे ॥३॥०॥१३॥ ॥ इति ॥

॥ ज्ञानपंचमी नुं स्तवन ॥

ऐसी विधि तेंने पाई रे। तप पंचमी करजा॥ नन्दीसूत्र विशेष आवश्यक ज्ञान कथन सुख-दाई रे। पन तिमिरको हरजा ॥ १॥ ऐसी०॥ मति अन्नावीस । श्रृतचऊदहवीस ॥ ठक अवधि नेदेगाई रे । असंख्या नेदकुं सुणजा ॥शाऐसीणा दोय नेदे मन पर्यव आख्युं ॥ क्जुविपुल गुणदाईरे एक केवल सरज ॥ ३ ॥ ऐसी**ँ** ॥ चारमूंगे एक वोलत सुंदर श्रुतज्ञाने जिनरायारे । वाणीज-/ विजीव तिरजा ॥॥। ऐसीणा ज्ञान कियामें।नाणकी मुक्ता ॥ सत्यासत्य जगाई रे । गम्या अगम्यकुं गिएजा ॥ ए ॥ ऐसी० ॥ पंचमी तपद्रो । कर्म क्वोर ॥ गुण मंजरी गुणपाई रे ॥ वरदत्त सिम-रजा ॥६॥ ऐसी०॥ ग्रुज कार्तिक ग्रुदि । पंचमी

दिवसे ॥ नाण जगित ध्यान ध्याई रे। तप जावकुं धर् रजा ॥७॥ ऐसी०॥ पंचमीतप । पंचमास वरसकर ॥ सेवा अईनकी पाईरे॥ शुज छानंद वरजा॥ एऐसी०

॥ महावीरस्वामी नुं स्तवन ॥

वीर प्रज जैसे वनै वैसे तारो । मेरी करणी नाहिं विचारो ॥ अवगुण जरे अनेक मुजजीतर। ग्रुणको नही खबलेश ॥ वीर० ॥ १ ॥ मेंहूं रक अनाथ प्रजुजी । आयो शरण तुमारे ॥ करुणाः सागर नाम धरावो । राखो शरण तुमारे ॥ वीर०॥ २ ॥ शरणे आया ने ठाम न देशो। अपनो विरुद संजारो ॥ दीन दयाबु तुमहो स्वामी । जव सायर पार जतारो ॥ वीर० ॥ ३ ॥ जब छानंत में जट-क्यो प्रजुजी। फु:ख अनंत मे पायो॥ नरक नि गी-दमें पिन्यो स्वामी । शरणे किणही न राख्यो ॥ ध ॥ पाप कर्मको पोटलो वांध्यो । कुमित सें कुमत मिलायो ॥ सद्गुरु की संगत नहीं पायो । वृथा

जन्म गमायो ॥ ८ ॥ वीर० ॥ माया कपट से किया कीनी । धर्मी नाम धरायो ॥ धर्म तत्त्वको सार न जाएयो । समिकत श्रद्धा न पायो ॥ ६ ॥ वीर० ॥ व्यवतो शरण गह्यो प्रजुतेरो । सुमित को संग करायो ॥ कुमित कुटिल को इर हटाके । मोक मार्ग वतलायो ॥ ७ ॥ वीर० ॥

॥ इप्रथ श्रीधर्मजिनस्तवनं ॥॥ हारे मारे जोवनीयांनो लटको दहानाचार जो ॥ ए देशी ॥

हारे मारे धर्म जिएंदशुं लागी पूरण प्रीत जो. जीवमलो ललचाणो जिनजीनी उलगे रेलो॥ हारे मुने थाशे कोइक समय प्रजुजी प्रसन्न जो, वातमली तव माहारी सिव थाशे वगे रे लो॥१॥ हारे कोइ दुरजननो जंजेस्थो माहारो नाथ जो, उलवशे नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो॥ हारे माहारा स्वामी सिरिस्नो कुण हे दुनीयांमांहि जो;

जङ्ये रे जिम तेहने घर आजा करी र खा।।१॥ हारे जस सेवासेंती स्वारण न होते सिद्ध जी. गली रे शी करवी नेहणी गोतकी रे लो॥ हार जुतुं खाये ने मीठाइने माटे जां. कोइ रे गरमा-रयविण नही प्रीनमी रेखो ॥३॥ हार प्रगु अंतर-जामी जीवन प्राण त्याधार जो, वाह्यो रे निव जाणे कलियुग वायरो रे लो ॥ हारे माहारा **लायक नायक जगत वत्सल जगवान जो, वाह** रे ग्रणकेरो साहिव सायरो रे लो ॥ ४ ॥ हांरे प्रज लागी मुफने ताहरी माया जोर जो, अलगारे रह्याथी होय उसिं गलो रे लो ॥ हांरे कुणजाणे श्रंतर्गतनी विण महाराज जो, हेजे रे हसी बोलो वांमी आमलो रे लो ॥ ए ॥ हांरे तहारे मुखने मटके अटक्यु महारुं मन्न जो, आंखमली अणी-याली कामणगारीयुं रे लो ॥ हारे मारे नयणां लंपट जोवे खिए खिए तुज जो, रातां रे प्रजुरूपे

न रहे वारियुं रे खो ॥ ६ ॥ हांरे प्रज त्रखमा तो पण जाणजो करीने हज़्र जो. नाहारी रे विल हारी हुं जान वारणे रे खो ॥ हांरे किय रूप विज्यनो मोहन करे त्रारदास जो. गिरुत्राथी मन आणी जलट स्मिन घणे रे खो ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अय श्रीवीरप्रजुनुं दीवालीनुं स्तवन॥

मारगदेशक मोछनो रे, केवल ज्ञानिशान॥
नाव द्या सागरप्रजु रे, पर उपगारी प्रधानो रे॥
रे॥ वीर प्रजु सिक थया॥संघ सकल आधारो रे,
हवे इण जरतमां॥ कोण करशे उपगारो रे॥
वीर०॥ १॥ नाथ विहुणुं सैन्य ज्युं रे, वीर
विहुणो रे संघ॥साधे कोण आधारथी रे, परमा
नंद अजंगो रे॥ वीर०॥ २॥ माना विहूणो
वाल ज्युं रे, अरहो परहो अथमाय॥वीर विहुणा
जीवका रे, आहल व्याकुल थाय रे॥वीर०

संशय वेदक वीरनो रे विरह ते केम खमाय॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे. ते विण केम रहेवायो रे ॥ बीरणा ए॥ निर्यामक त्रव समुद्धनो रे, त्रवछामवि सत्रवाह ॥ ते परमेश्वर विण सले रे, कंम वाधे उत्साहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीरथकां पण श्रुत तणो रे, हतो परम श्राधार ॥ इवे इहां श्रुत श्राधार हे रे, श्रहो जिनमुद्धा सारो रे । वीरण ॥ था। त्रण काले सिव जीवने रे, खागमथी खाण्द ॥ सेवो ध्यावो जवि जना रे, जिनपिनमा सुखकंदो इ्णी परे सिद्ध ॥ जव जव आगम संगथी रे, देव चंद्र पद लीध रे ॥ ए ॥

॥ अथ श्री एकाद्शीनी सजाय प्रारंजः॥ आज महारे एकाद्शी रे, नणद्ख मौन करी मुख रहिये॥ पूठ्यानो परुत्तरपाठो, केहने कांइ न कहिये॥ आ०॥ १॥ महारो नणदोइ

तुजने वाट्हो, मुजने ताहारो वीरो॥ धूत्रामाना वाचका जरतां, हाथ न आवे हीरो ॥ आ० ॥श॥ घरनो धंधों घणो कस्त्रो पण, एक न आव्यो श्रामो ॥ परनव जातां पालव जाले. ते मुजने देखाको ॥ ञ्रा० ॥ ३ ॥ मागशिर ग्रुदि ञ्रगीया-रश महोटी, नेवुं जिनना निरखो ॥ दोहोढशो कल्याणिक महोटां, पोथी जोई ने हरखो॥ आव ॥ ४ ॥ सुत्रत रोठ थयो शुद्ध श्रावक, मौन धरी मुख रहयो ॥ पावक पूर सघलो पर जाख्यो, एहनो कांई न दहीयो ॥ आ०॥ थ ॥ आठ पहोर पोसो ते करिये, ध्यान प्रजुनुं धरिये ॥ मन वच काया जो वश करिये, तो जब सायर तरिये ॥ था। । ६ ॥ ईर्या समिति जापा न वोले, आर्छ श्रवहुं पेखे ॥ पिकमणाद्यं प्रेम न राखे, कहो केम लागे लेले॥ आ०॥ ३॥ कर उपर तो माला फिरती, जीव फरे मनमांही ॥ चितकुं तो चिहुं-

वेरीनी पुष्टिनो करनारो मोहोटी चिंता शोक गारव छने खेदनो करनार, संसाररूप छगाध विद्यानो सिंचवावालो, कूम कपट छने क्लेशनो श्रागर, मोहोटा खेदनो करावनारो, मंदबुद्धिनो **यादस्वो, उत्तम साधु निर्मथोये जेने** निंघो हे, अने सर्व लोकमां सर्व जीवोने एना सरिखो वीजो कोइ विपम नथी, मोहरूप पाशनो प्रतिवंधक, इहलोक तथा परलोकना सुखनो नाश करनार, पांच आश्रवनो आगर, यनंत दारुए डुःख यने जयनो देवावालो, महोटा सावद्य व्यापार कुवा-णिज्य कुकर्मादान नो करावनारो, अध्व, अनित्य, अशास्वतो, असार, अत्राण, अशरण, एवो जे आरंज अने परियह तेने हुं क्यारे ठांकीश ? जे दिवस ठां निश, ते दिवस महारो धन्य ठे! ॥ ए प्रथम मनोरथ ॥

२ क्यारे हुं मुंक थइने दज़ प्रकारे यतिधर्म

भारी, नववामे विद्युक्त ब्रह्मचारी सर्व सावद्य परि-हारी ष्यणगारना सत्तावीश ग्रणधारी. पांच समिती त्रण ग्रुसिये विद्युक्तविहारी, मोहोटा अनियहनो धारी, वेहेतालीश दोप रहित विशुद्ध श्राहारी. सत्तर जेदे संयम धारी, बार जेदे तपस्याकारी. श्रंत श्राहारी, प्रांत श्राहारी श्ररस श्राहारी, विरस याहारी, बुख्व याहारी, तुत्र याहारी, यंत-जीवी, प्रांतजीवी, व्यरसजीवी, विरसजीवी, खुरुख-जीवी तुज्ञजीवी, सर्व रस त्यागी, ठकायनो दयाल, निलींची, निःस्वादी, पंखी तुल्य, वाय-रानी परे अप्रतिवक्त विहारी, वीतरागनी आज्ञा-सहित, एहवा गुणोनो धारक जे अणगार ते हुं केवारे थईश ? जे दिवस हुं पूर्वोक्त गुणवान या इश ते दिवस धन्य हे॥ ए वीजो मनोरय ॥ ३ क्यारे हुं सर्व पापस्थानक छालोई, निःशस्य

श्रइ, सर्व जीवराशि खमावीने, सर्ववत संजारीने, 🕝

शहार पापस्पानकती जितिने जितिने नागरीने. चारे ह्याहार पन्तरकीने, जरीरने, वेनेदे ह्यासी-च्यासे वोसगवीने जण पागधना पागपती पकी. चार मंगलिक रण चार गरण मुखे उदारनी पकी. सर्व संसारने पूठ देनो यको, एक अस्टिन,बीजा निक, बीजा साधु, अने चोषो केनलि प्ररापित-धर्म, तेने ध्यावनो अको, शरीरनी ममता रहित थयो थको, पाढोप गमन संपारा सहित, पांच अतिचार टालनो अको, मरणने अण्यांठनो अको. एहवुं पंकित भरण श्रंतकाले मुक्तने कराविश ? ॥ ए त्रीजो मनोरय ॥

ए त्रण मनोरयने श्रावक, मन, वचन छने कायायेकरी शुद्धपणे ध्यावतो यको सर्व कर्म निर्क्तरीने संसारनो छंत करे, मोक्हप शास्वत स्थानक प्रत्ये पामे ॥

ंसितनात्र नगः ।

१४ नियम धारणे की विधि।

प्रिय बांपवा ! देखां जन धर्मकी कैली अर्जी रीतियें हें छोर छानियों ने केने केने महज रम्ने पाप में बचने के लिये बनाये हैं. अन्य है ! विचार कर देखना चाहिये कि संसारी जीवों में अविग्निकी किया चोंदर (१४) राज-क्रीकमें जिननी बस्तु हैं सबकी त्यारही है, बाहे नोन में श्राव चाहे नहीं. इसी कारण ने जीव श्रनादि काल ने कमों ने जारी हो रहा है श्रीर वत प्रलाग्यान (पद्मण्यान) होत्रे तो जितनी नोग में श्रावें उन्नी ही की किया खगे, वाकी सब बट जावे. ज्ञानी महागाजने पाप से बुटने का कसा सहज रम्ना बनाया है. चोदह नियम धारने इनने सहज हैं कि पांच मिनट में धारे जाते हें श्रीर इंका होय जितना रखबों,

काम त्यदकता नहीं: केवल ज्ययोग रणना वा-हिये. इसका राज्यास जलदी हो जाता है. फिर कुठ जी जार नहीं मालम होता. त्यार फायहा इतना है जिसका पार नहीं: जैसे समुद्र बरावर पाप से तृदके एक बिन्द से जी कमती रहजाय तो ऐसे फायदे को मत ठोको।

श्रावक को बारह बनक्ष खेन तो जहर चा-हिये, उसमें जी खुसी होय जितना रख छी-जिये; किनताई बहुत कम है. जबतक बारह वत नहीं जी खिये हैं तो जी चोटह नियम धारने तो अवस्य ही चाहिये. इसका अज्यास करते १ बारह बत जी उदय आ सकेंगे. क्योंकि

अ वारह व्रत यह हैं-१ म्थूल प्राणातिवात विरमण. २ स्थूल-मृपावाद विरमण. ३ स्थूलअटताटान विरमण. ४ स्थूल मेथुन विरमण. ५ स्थूल परिग्रह परिमाण. ६ दिक्षिरमाण. ७ मोगोपमोग परिमाण. ८ अनर्थदंड विरमण. ९ सामायिक, १० टेशावकाशिक, ११ पोषध, १२ अतिथिसंविभाग,

सीढी सीढ़ी चढा जाता है. अगर नियम धारने-वाले की अकस्मात् मृत्यु हो जाय तो प्रत्या-ख्यान रहने से सुगति में जावे ऐसे अनेक फायदे हैं।

प्रिय जाड्यो ! ऐसी जोगवाई पूरे पुन्यों से मिलती है. मनुष्य जन्म. छार्य केन्न. जत्तम छल, जैन धर्म यह सब पायके जो बने सो करलो, बार बार ऐसा जोग मिलना किन है.

चौदह नियम धारने की विधि।

दिनके चार प्रहर के नियम संवरे मुंह धोने के पहले धारके सामको पार लीजिये रा-त्रिके चार प्रहरके फिर साम को धारके संवरे पार लीजिये. नियम तीन नवकार गिनके लीजिये, खोर तीन नवकार गिनके पारिये पारने के वरूत जो रक्खा था जसको याद करके संजाल — जिये. कमती लगा उसका लाग हुआ, तृल में ज्यादा लगा उसका "मिच्ठामि फुक्कम" दीजिये और आठ प्रहर के नियम धारने से चार प्रहर के नियम धारने में सुगमता रहती है क्योंकि पारने के वक्त जो जो वस्तु जोग में आया हो उसका मिलान सुगमता से हो सकता है।

कोई व्रतधारी श्रावक जन्म जरके निर्वाह के वास्ते ज्यादे ज्यादे वस्तु रखते हैं तो १४ नि-यम धारने से जनका जी आश्रव संकेप हो जाता है इस वास्ते व्रत धारी को ओर अवि-रतिको अवस्य १४ नियम धारने चाहिये

चौद्रह नियमें की गाथा। सचित्ते दठवे विगेष्ट्र वाण्ह् तंबोलें वर्र्ष्य कुर्सुमेसु। वार्ह्मण सर्यण विलेबेंण वंदी दिसिं न्हाणें जत्तेसें रा गाथाका संक्षिप्त अर्थ।

र सचित्त-कचा पानी, हरी तरकारी, फल, पान, हरा दांतन, निमक आदि, १ इच्य-जितनी बीज मूहमें जावे उतने ड्रव्य-जल मंजन, दांतन, रोटी, दाल, चावल, कढी. साग, मीठाई, पूरी, घी, पापक, पान, सुपारी, चूरण आदि (३विगय-१० जिनमेंसे मधु, मांस, माखन, श्रौर मदिरा ये ४ महाविगय छानद्य होनेसें, श्रावकको छावश्य लाग करने चाहिये और ६ श्रावकके खाने योग्य हैं, घी, तेल, डूघ, दही, गुफ, अथवा मीठा पकान्न (जो ककाहीमें जरे घी अथवा तैल में तला जाय.) ४ जपानह-जूता, चटी, खनाजं, मोजा आदि (जो पांवमें पहेना जाय) ए तंबोल पान, सुपारी, इलायची, लोंग, पानका मसाला त्र्यादि. ६ वत्थ (वस्त्र) पगडी, टोपी, श्रंगरस्ना, चोगा, कुरता, धोती, पायजामा, खुपहा, चहर, अंगोठा. रुमाल, आदि मरदाना जनाना कपना (जो आढने पहरनेमें आवे.) १ कुसुमेसु-फूल, फूलकी चीचें जैसें सिज्या, पंखा,सेहरा,तुरी, हार,

ातर (ने नी त साने में पोरे) हता न (सराधी) गामी, फिट्न, शिगरम,दाणी पोमा, रप, पानधी भोली, रेख, रार्ग, नाग, जनाव, रशीगर पलन त्यादि यानि तरता, फिरता, चरता पार चमता. सवन एकरमी, नीकी, पहा, पलंग, तरात, मेज, सु म्बासन गाढि (सोने वा वैठनेकी नीजे). १० विंह-पन तेल, केशर, चंदन, तिलक, सुरमा, काजल, छब-टना, हजामत, बुग्स, कंगा,काच देखना, दबाई, श्रादि (जो चीज गरीर में लगाई जावे). ११ वंज (ब्रह्मचर्य)-स्त्री, पुरुपने, सुङ् मोरेके न्याय तथा वाह्य विनोदकी संख्या करलेनी. श्रावक परदारात्याग छोर स्वदारासेंही संतोष रखें, उसका जी प्रमाण करें. १२ दिसा (२० दिशा) शरीर से इतने कोस (लंबा, चोका, उंचे, नीचे) जाना छाना, चिट्ठी तार इतने कोस नेजना, माल श्रादमी इतने कोस जेजना, तथा मंगाना. १३

हो जाय, ख्रीर जिसमें से तेल नहीं निकले, उस अन्नको कचे रूध, दही, ठासके साथ अलग अथवा मिलाय के खाना वसा दोप कहा है. हही वगैरह खूव गरम करके साथ खाने में वि-दलका दोप नहीं है. १ स्त्राचार सब तरह का संधान ३ रोज वाद अजह्य हो जाता है. ३ कंट-मूल ३१ त्र्यनन्तकाय, यह सब से जादे दोषकी चीज होने से विलकुल ठोमने लायक है. ध मक्तन, सहत आदि ११ अनस्य * श्रावक को जरूर ही ठोकना चाहिये. न वृष्टे तो जितना बूटे जतना ठोमिये. थोंभे से जिटहा के स्वाद के

^{*} र वड्के, २ विपलक, ३ विसल्याक, ४ कठंबरके, ५ गूलर ; फल, ६ मदिरा, ७ मास, ८ मधु, ९ मक्कन १० वरफ, ११ निजा, १२ ओले, १३ मर्डि, १४ रात्री भाजन १५ बहुवीजा फल १६ संघान (आचार), १७ द्विंदल, १८ वेगण, १९ तुन्छ फर २० अजाना फल, २१ चीलतरस, २२ वर्तीस अनतकाय,

हो जाय, श्रोर जिसमें से तेल नहीं निकले, उस अन्नको कचे प्रुध, दही, ठासके साथ अलग अथवा मिलाय के खाना वका दोप कहा है. दही वगैरह खूव गरम करके साथ खाने में वि-दलका दोप नहीं है. २ आचार सब तरह का संधान ३ रोज वाद अजस्य हो जाता है. ३ कंद-मूल ३१ अनन्तकाय, यह सव से जादे दोपकी चीज होने से विखकुल ठोमने लायक है. ध मक्खन. सहत छादि ११ छन्नदय * श्रावक को जरूर ही ठोमना चाहिये. न बुटे तो जितना बूटे जतना ठोमिये. थोमे से जिव्हा के स्वाद के

^{*} १ वहके, २ विपलके, २ पिलखणके. ४ कठंबरके, ५ गूलर के फल, ६ मदिरा, ७ मांस, ८ मधु, ९ मक्खन १० वरफ, ११ निशा, १२ ओले, १२ मद्दि, १४ रात्री भोजन १५ बहुबीजा फल. १६ संधान (आचार), १७ द्विदल, १८ वेंगण, १९ तुन्छ फल, २० अजाना फल, २१ चलितरस, २२ वर्त्तीस अनंतकाय,

हो जाय, श्रीर जिसमें से तेल नहीं निकले, उस अन्नको कडो हुध. दही. ठासके साथ अलग श्रयवा मिलाय के खाना बना दोप कहा है. दही वगैरह खूब गरम करके साथ खाने में बि-दलका दोप नहीं है. २ छाचार सब तरह का संधान ३ रोज बाद श्रनदय हो जाता है. ३ कंद-मृल ३१ श्रनन्तकाय. यह सब से जादे दोपकी चीज होने से विखकुल ठोमने लायक है. ४ मक्खन. सहत छादि ११ छत्रदय 🕫 श्रावक को जरूर ही ठोमना चाहिये न हट तो जितना वृद्दे जतना वोमिये. थोमे से जिन्हा के स्वाद के

^{*} १ वडके, २ पिपलक, २ पिलल्याके. ४ कटंबरके, २ गृल्र के फल. ६ मिटिंग, ७ मांस, ८ मधु, ९ मक्लन १० वरफ, ११ निज्ञा, १२ ओले, १३ मिटि, १४ सत्री मोजन १९ वहुबीजा फल. १६ संघान (आचार), १७ हिंदल, १८ वेगण, १९ तुन्छ फल, २० अजाना फल, २१ चलितरम, २२ वत्तीस अनतकाय.

वास्ते जीव पाप से जारी होकर जवजब में बहुत छुख पावे ऐसा नहीं करना चाहिये इनसें जादे स्वाद की चीज बहुत हैं.

अथ श्री श्रावककी करनी की सकाय।

॥ चौपाई ॥ श्रावक तूं उठे परनात । चार घनी ले पाठली रात ॥ मनमें समरे श्रीनवकार । जिम पामे जवसायर पार ॥१॥ कौन देव कौन गुरु धर्म कौन हमारे ठे कुल कर्म॥ कौन हमारे ठे व्य-वहार। एहवो चींतव जे मन मांह ॥ १ ॥ सामा-यिक लीजे मनशुद्ध । धर्मतनी हीय में धर बुद्ध ॥ पिकक्रमणा कर रयनी तसु। पातिक आलोवे आ-पसुं ॥ ३ ॥ काया सक्ति करे पञ्चख्वान । सूधी पाले जिनवर त्र्यान ॥ जनजे गुनजे स्तवन सकाय। जिम हुंती नीसतारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित चोदे निम । पाले दया जिव तहसिम ॥ देहरे

जाय जुहारे देव। इटय जाव से करजे सेव ॥५॥ पोसाले गुरु वंदन जाय । सुनेवखान सदा चित लाय ॥ निरदृपन सुकतो श्राहार । साधांने दीजे सुविचार ॥ ६ ॥ स्वामी वच्छल कीजे घना । सगपन मोटा स्वामीतना। इखिया हीना दीना द्ख। करजे नास दया सुविसेस ॥ ७॥ घर श्रनुसारे दीजे दान । मोटासुं म कर श्रनिमान ॥ गुरु मुखे जीजे आखमी। धर्म न ठोमो एके यमी ॥ ए ॥ वारू शुक्त करे व्यापार। श्रोता श्रिः कानो पिन्हार॥ म जरे केहनी कूकी साख कूका सोंस कथन मत जाख ॥ ए॥ अनंत काय कहिये वत्तीस। व्यनक् वावीसे विसवा विशा ते नक्ण न करीजे किमें। काचा कवलां फल मत जिमें॥१०॥ रात्री जोजननो वहु दोप।जाणीने करिजे संतोप॥ साजी साबू खोह ने गुली। मधु धाहमी म वेचे वली ॥ र१ ॥ वलि म करावे रंगण पास । दृपण

घणां कह्या हे तास । पाणी गलजे वे वे वार । ऋण-गल पीधां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीना कर जतन्न । पातक ठोमी करजे पुन्न ॥ ठाणां इंधण चूलो जोय । वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर । अणगल नीर में धोए चीर ॥ वारे वत सूधा पालजे । छतीचार सगला टाखजे ॥ १४ ॥ कहिया पनरे करमादान । पाप-तणी परहरजे खान ॥ शीश म क्षेजे अनरथदं न। मिथ्या मैल म जरजे पिंम ॥ १५ ॥ समिकत शुक्र हीयमे राखजे । बोल विचारीने जाखजे ॥ **जत्तम ठामे खरचो वित्त । पर उपगार करो** शुन चित्त ॥ १६ ॥ तेल तक घृत इध ने दही । उघा-मा मत मेलो सही ॥ पांचे तिथ म करो छारंज। पालो शील तजो मन दंज॥ १९॥ दिवश्चरम कीजे चलविहार। च्यारे आहारतणो परिहार॥ दिवसतणां त्रालोए पाप । जिस जांजे सघला

संताप ॥ १०॥ संध्याये आवश्यक साचवे। जिन-वर चरण शरण जव जवे ॥ च्यारे शरण करी टट होय । सागारी अणशण ले सोय ॥ १ए ॥ करे मनोरय मन एहवा। जाऊं तीर्थ शत्रुंजे जे-हवा॥ समेतशिखर आत्रू गिरनार। जेटीश कवहुं धन अवतार॥ १०॥ श्रावकनी करणी ठे एह। एह्थी याये जवनो ठेह ॥ आठे करम पमे पा-तला। पापतणा ट्टे आमला॥ ११॥ वारू लहीये अमर विमान । अनुक्रम पामे शिव पुरथान ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससनेह । करणी छःखहरणी ठे एह ॥ ११॥

इति श्रात्रक करनी समाप्त ।

अथ स्तक विचार प्रारंज ।
॥ प्रथम कोइने घरे जन्म थाय ते विषेणः
१ पुत्रजन्मे दिन दशनुं सूतक तथा

दिन अगीयार अने रात्रे जन्में तो दिन वारतुं सूतक.

२ वार दिवस घरना माणस देव पूजा करे नहीं.

इ न्यारा जमता होय, ते वीजाना घरना पाणीश्री जिन पूजा करे छने सूत्रावक करनारी तथा करावनारी ने तो नवकार गणवो पण सूजे नहीं.

४ तथा प्रसववाली स्त्रो, मास एक सुधि जिन-प्रतिमा ना दर्शन करे नहीं तथा दिन (४०) सुधि जिन प्रतिमानी पूजा न करे, अने साधुने पण वोहोरावे नहीं, एम विचारसार प्रकरण मध्ये कह्युं ठे.

ए घरना गोत्रीने दिन पांचनुं स्तक जाणवुं.

६ व्यवहार जाण्यनी मलयगिरि कृत टीका मध्ये जन्मनुं सूतक दिन दशनुं कह्यं वे

उ गाय, घोमी, उंटणी, जेंस, घरमा प्रसवे, तो

दिन वेनुं स्तक अने वनमा प्रसवे. तो दिन एकनुं सृतकः

- ण नेंस प्रसवे, तो दिन पंदर पठी तेनुं दृध कह्ये.
- ए गाय प्रसंब, तो दिन दश पठी तेनुं इध कहपे.
- रिण् वाली चकरी प्रसंव तो. दिन आंव पवी नेतुं दूध कल्पे.
- ११ जंटणी प्रसवे, तो दिन दश पठी तेनुं दृध कह्पे.
- ए दास दासी के जेनो छापणेज छाश्रय जन्म याय, अने जे छापणीज नजर छागल रह्यां होय, तो तेनुं चोवीश पहार सुधीस्तक जाणवुं.
 - ॥ ऋतुवंती स्त्री संवंधि सूतक निर्णय ॥
 - र दिन त्रण सुधी जांमादिकने तुवे नहीं, दिन चार तंगे पिकक्रमणादिक करे नहीं पण तपस्या करें, ते लेखे लागे. दिन पांच पठी जिन पूजा करें. रोगादिक कारणे त्रण दिवस वीत्या पठी पण जो रुधिर दीठामां आवे, तो तेनो दें

नथी. विवेक करी पवित्र थई जिनप्रतिमा-दिक जिनद्दीन अयपूजादिक करे, तथा साधु ने पिनलाजे, पण जिनप्रतिमानी अंगपूजा न करे. एम चर्चरीयंथमां कह्युं हे.

॥ मृत्यु संवंधी सूतकनो विचार ॥

- १ घरनुं कोइ मरण पामेखुं होय तो सूतक दिन वारनुं तेने घरे साधु खाहार खिये नहीं, तेना घरना खिन तथा जलवी जिन पूजा थाय नहीं, एम निशीय चूर्णीमां कह्युं ठे. निशीय सूत्रना शोलमा जहेशामां जन्म तथा मरणनुं घर छुगंठनिक कह्युं ठे.
- २ मृत्युवाला पास सुए तो दिन त्रण पूजा न करे.
- ३ कांधिया, देवदर्शन पिकक्षमणादिक त्रण दिन न करे, परंतु जो नवकारनुं ध्यान मनमां करे, तो तेनो कांड् पण वाध नथी.
- ४ मृतने व्यमक्या न होय तो स्नान कीधे ग्रुऊषाय'

(२०७)

नथी. विवेक करी पवित्र थई जिनप्रतिमा-दिक जिनदर्शन अप्रयूजादिक करे, तथा साधु ने पिक्लाजे, पण जिनप्रतिमानी अंगपूजा न करे. एम चर्चरीयंथमां कह्युं वे.

॥ मृत्यु संवंधी सूतकनो विचार ॥

१ घरनुं कोइ मरण पामेखुं होय तो स्तक दिन बारनुं तेने घरे साधु छाहार खिये नहीं, तेना घरना छिन्न तथा जलवी जिन पूजा थाय नहीं, एम निशीय चूर्णीमां कह्युं ठे. निशीय स्त्रना शोलमा उद्देशामां जन्म तथा मरणनुं घर छुगंठनिक कह्युं ठे.

श मृत्युवाला पास सुए तो दिन त्रण पूजा न करे.
३ कांधिया, देवदर्शन पिकक्षमणादिक त्रण दिन न करे, परंतु जो नवकारनुं ध्यान मनमां करे, तो तेनो कांइ पण वाध नथी.

४ मृतने अमक्या न होय तो स्नान की धे शुद्धयाय'

थ अन्य पुरुष जो मृतने अमक्या होय तो ते शोल पहोर पर्यंत पिकक्षमणादि न करे.

६ जेने घरे जन्म तथा मरणनुं सूतक थाय, तेने घरे जमनारा दिन बार सुधी जिनपूजा करे नही.

^घ वेपना पालटनारा आठ पोहोर सूतक पाले.

ण जन्मेते दिवसे मृत्यु थाय अथवा देशांतरे मरण पामे अथवा जित मरे तो दिन एकनुं सूतक.

श्वाठ वर्षथी नानुं वालक मरण पामे, तो दिन श्वाठनुं सूतक, विचारसार प्रकरणमां कह्युं ठे.

रेण्गाय प्रमुखनुं मृत्यु थाय तो कलेवर घरथी बाहेर लिह गया पठी दिन एक लगे सृतक अने अन्य तिर्यचनुं कलेवर पमयुं होय, तेन तो घरथी वाहेर लइ जाय, तिहां सुधी सृतक पठी नहीं.

दास दासी जे आपणी निश्राये घरमां रह्यां होय तेनुं मृत्यु थाय, तो त्रण दिवसे सूतक लागे

- १२ जेटला महिनानो गर्ज पमे, तेटला दिवस सृतक.
- १३ परदेश गयेलानुं मरण थयुं सांजले तो एक तथा वे दिवसनुं सृतक लागे, एम कल्पजा-प्मां कह्युं वे.
- १४ गोमूत्रमां चौवीश पहोर पठी, नेंसना मूत्रमां शोल पहोर पठी, गामर गधेमी तथा घोमी-ना मूत्रमां छाठ पहोर पठी छने नर नारी-ना मूत्रमां छंतर मुहूर्त पठी संमूर्च्ठिम जीव उपजे ठे.

॥ समाप्त ॥

पुन्तक मिलने का ठिकाणा— वाव्रू सुमेरमखजी सुराणा, ठिकाणा–मनोहरदास का कटरा। वड़ा वाजार (कलकरा)